रबी फसल बोने से पहले बीज शोधन जरूर करें किसान

डॉ. आर.पी. सिंह

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र चौक माफी पीपीगंज, गोरखपुर उ.प्र.

खेती से जुड़े किसान भाई रबी फसलों में बुवाई से पूर्व बीज शोधन अवश्य करें। किसान भाईयों आप इस पुरानी कहावत से भली–भॉति परिचित हैं कि **''जो जैसा बोता है, वैसा ही काटता है''**। स्वस्थ और निरोग बीज बोने से ही फसल स्वस्थ होगी तथा अधिक उत्पादन प्राप्त होगा। फसलों में बहुत से रोग बीज से ही फैलते हैं। रोग उत्पन्न करने वाले कारक बीज की सतह पर या बीज के अन्दर अथवा बीज के साथ मिले रहते हैं। यह रोगजनक बीज बोने के बाद अपनी अनुकूल परिस्थिति पाकर वृद्धि शुरू कर देते हैं। रोगाणुओं की उग्रता बढ़ने पर अंकुरण से लेकर फसल की वानस्पतिक व बालियॉ निकलने की अवस्था तथा बालियों में भी रोगों का प्रकोप हो सकता है जिससे उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। रबी की फसलों में–गेहूं व् जौ में झुलसा, कण्डुआ, चना में उकठा, बीज सडन, तना गलन, जड़ सडन, पत्ती धब्बा रोग, झुलसा रोग, मटर में झुलसा, पत्ती धब्बा रोग, आलू में अगेती–पिछेती झुलसा, टमाटर में झुलसा, पौध गलन, मिर्च में झुलसा रोग, पौध गलन, लहसुन, प्याज के झुलसा रोग, गोभी में पत्ती धब्बा रोग, मिर्च, टमाटर, गोभी, बैगन में पौध गलन रोग आदि प्रमुख हैं, बीज शोध के लिए किसान भाई– कार्बोक्सिन 37.5 प्रतिशत + थायरम 37.5 प्रतिशत (विटावैक्स पावर) अथवा कार्बेडाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू. पी. की 2 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज दर से शोधन कार्य करें अथवा रसायनों के अतिरिक्त जैविक नियंत्रकों जैसे–ट्राइकोडर्मा पाउडर की 10 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम की दर से शोधित कर सकते हैं। यदि जैविक व रासायनिक दोनों दवाओं से बीज शोधन करना चाहते हैं तो बुवाई से 4–5 दिन पहले रसायनों से बीज ' शोधन कर लें तथा बुवाई के एक दिन पहले जैव नियंत्रकों से बीज शोधन करें, लेकिन जैव नियंत्रकों की मात्रा दुगुनी कर दें।

बीजोपचार से लाभ: बीजोपचार करने से लाभ ये होता है कि बीज के चारो ओर एक कवच सा बन जाता है जिससे अंकुरण के समय मृदा जनित रोगों से सुरक्षा होती है। बीजोपचार करने से अंकुरण प्रतिशत बढ़ जाता है तथा अधिक संख्या में स्वस्थ पौधे प्राप्त होते हैं जिससे पैदावार में वृद्धि होती है।

बीजोपचार करते समय सावधानियॉ: बीजोपचार करते समय कुछ सावधानियॉ बरतने की जरूरत पड़ती है जैसे–इनका प्रयोग करते समय किसी भी प्रकार का धुम्रपान न करें। जिस व्यक्ति के घाव या अन्य आन्तरिक क्षति हो, तो ऐसे व्यक्ति से बीजोपचार

न करवायें। उपचारित बीज को किसी गीले स्थान पर न रखें। आवश्यकतानुसार ही बीज को उपचारित करें। हाथों में दस्तानें और मुख पर कपड़े या मास्क का उपयोग करें। जहॉ तक सम्भव हो उपचारित बीज की बुवाई शीघ्र करें। दवा के खाली पैकटों तथा डिब्बों को नष्ट कर दें। जब बीजउपचार का कार्य पूर्ण हो जाय तो उसके बाद हाथ–पैर एवं मुॅह को अच्छी तरह से साबुन से धोयें। यदि किसान भाई बतायी गयी विधि के अनुसार रबी फसलों में बीज शोधन का कार्य करते हैं तो फसल की वानस्पतिक अवस्था में फैलने वाले रोगों से निजात मिल जाता है जिससे अंधाधुंध रसायनों के प्रयोग में काफी कमी की जा सकती है। स्वस्थ एवं निरोग फसल प्राप्त कर अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है तथा वातावरण को प्रदूषित होने से बचा सकते है।

'बचाव ही सुरक्षा का सर्वोत्तम उपाय है'